हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(संचयन) (पाठ 6)(मधुकर उपाध्याय –दिए जल उठे)

(कक्षा 9)

बोध प्रश्न

प्रश्न 1:

किस कारण से प्रेरित को स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया ?

उत्तर 1:

अहमदाबाद के आंदोलन के समय सरदार पटेल ने स्थानीय कलेक्टर शिलिडी को वहाँ से भगा दिया था इसी का बदला लेने के लिए उसने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया मगर ऐसा आदेश देकर वह स्वयं बुरी तरह फंस गया क्योंकि इस गिरफ्तारी का पूरे देश में विरोध हुआ।

प्रश्न 2:

जज को पटेल की सजा सुनाने के लिए आठ लाइन का फ़ैसला लिखने में डेढ़ घंटे का समय क्यों लगा ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर 2:

जज को यह समझ में नहीं आ रहा था कि पटेल को किस जुर्म में किस धारा के तहत सजा सुनाई जाए इसी सोच–विचार में जज को आठ लाइन का फैसला लिखने में डेढ़ घंटा लग गया ।

प्रश्न 3:

मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है। "–यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धृत पाठ के संदर्भ में दीजिए ।

उत्तर 3:

सरदार पटेल को तीन महीने की सजा हुई थी । उन्हें बोरसद से साबरमती जेल ले जाया जा रहा था बीच में गाँधीजी के आश्रम से होकर गुजरना था रास्तें में खड़ी भीड़ अपने नेता का इंतजार कर रही थी । जब पटेल के आग्रह पर गाड़ी आश्रम पर रुकी तो उन्होंने लोगों का अभिवादन स्वीकार किया और गाँधीजी से मुलाकात की तथा यह भी कहा कि मैं चलता हूँ अब आपकी बारी है ।

प्रश्न 4:

"इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें। " – गाँधीजी ने यह किसके लिए और किसके संदर्भ में कहा ?

उत्तर 4:

रास लोग रियासतदार थे उनके अपने दरबार थे वे लोग सब –कुछ छोड़कर गाँधीजी के सत्याग्रह आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए उनके साथ हो लिए थे देश के लिए रासों के त्याग और बलिदान को देखते हुए गाँधीजी ने वहाँ उपस्थित लोंगों से यह कहा कि इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें ।

प्रश्न 5:

पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि – ' कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी तालमेल से किया जा सकता है ।' अपने शब्दो में लिखिए ।

उत्तर 5:

गाँधीजी द्वारा चलाए गए आंदोलन को सफल बनाने के लिए हजारों की तादात में लोग मही नदी के तट पर पहुँच गए थे तथा वहाँ उपस्थित लोगों को रात के समय नदी को पार करना था और गाँधीजी के साथ मिलकर उनके आंदोलन को सफल बनाना था । ऐसी कठिन परिस्थितियों में सब को एक साथ होकर चलना ही यह सिद्ध करने के लिए काफी था कि कैसी भी परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी तालमेल से किया जा सकता है ।

प्रश्न 6:

महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

उत्तर 6:

नदी के दोनों किनारों हजारों की संख्या में लोग हाथों में दिए लिए हुए खड़े थे दोनों ही ओर कीचड़ था मगर लोंगो के उत्साह में कोई कमी नहीं थी । एक तरफ तो गाँधीजी के साथ पूरा जन–सैलाब था तो दूसरी ओर भी पूरा जन–सैलाब गाँधीजी के स्वागत के लिए उमड़ पड़ा था ।

प्रश्न 7:

" यह मेरी धर्म–यात्रा है । इसे मैं चलकर पूरी करूँगा । "– गाँधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होती है ?

उत्तर 7

गाँधीजी सिर्फ एक मार्गदर्शक नेता ही नहीं सबको साथ लेकर चलने वाले और सभी के सुख–दुःख में उनके साथ खड़े होने वाले महात्मा थे । अँधेरी रात में गाँधीजी को लगभग चार किलोमीटर पैदल दलदली जमीन पर चलना पड़ा जब उनसे आग्रह किया गया कि वे कुछ देर कंधे पर बैठ जाए्र तो उन्होंने साफ मना कर दिया और कहा कि मै आप सबके याथ पैदल ही चलूँगा । क्योंकि यह मेरी धर्मयात्रा है , इसे मैं चलकर ही पूरी करूँगा ।

प्रश्न 8:

गाँधीजी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नही थे कि गाँाधीजी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे । फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतिहाती कदम उठाए ?

उत्तर 8:

गाँधीजी के बारे में कुछ अधिकारियों का मानना था कि गाँधीजी अचानक ही अपने सहयोगियों के साथ नमक कानून तोड़ देंगे मगर गाँधीजी को समझने वाले अधिकारियों का मानना था कि गाँधीजी कभी भी कोई काम चुपके से नहीं करते हैं । फिर भी उन्होंने ऐहतियात के तौर पर समुद्र तट से सारे नमक के भंडार हटा लिए और उन्हें नष्ट करा दिया ताकि कोई खतरा ही न रहे ।

प्रश्न 9:
गाँधीजी के पार उतरने पर भी लोग नदी के तट पर क्यों खड़े रहे ?

उत्तर 9:
गाँधीजी के पार उतरने पर भी लोग नदी के तट पर इसलिए खड़े रहे क्योंकि सत्याग्रहियों का लगातार नदी के तट पर उतरना जारी था । रात में और भी सत्याग्रहियों को आना था और उनको भी नदी पार करानी थी ।